भारतीय साहित्य में विमुक्त घुमंतू समुदाय जीवन

डॉ.संतोष बबनराव माने
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज ४१६५०२
जिल्हा – कोल्हापूर (महाराष्ट्र)
मो . ९५५२०९३९७२

सारांश

विभुक्त घुमंतु समुदाय भारतीय समाज का ही अंग है फिर भी अन्य समाज की तरह इन्हे न्याय कम मिला है I यह समुदाय कभी अस्पृश्य के रूप में सामने आता है तो कभी पराक्रमी है I इस समुदाय में देशभक्ति भी सहज दिखाई देती है I हिंदू जाती से जुडे इस समाज को उपेक्षित रहना पडा है I इस उपेक्षित समाज के जीवन चरित्र को देखकर पाठक के मन में इनके प्रती दया, सहानुभूती प्रतीत होती है I

बीज शब्द- भारतीय, समाज, विमुक्त, घुमंतु।

प्रस्तवना

भारतीय समाज विविध जाती-धर्म से जुडा रहा है I भारत में विविध जाती धर्म होने पर भी सामाजिक एकता कायम है I बहु धर्म , बहु समाज और बहु समाज इस देश में है I परिणाम विविध भाषाओं का यह देश रहा है I भारतीय संविधान में अठारह से अधिक भाषा को महत्व दिया है I भारत में भाषा और बोलीओं की संख्या अधिक है I विविध भाषाएँ भी विविध समाज को दर्शाती है I जैसे हिंदी, मराठी, राजस्थानी, कन्नड, गुजराती आदी है I इन सभी भाषाओं के विविध साहित्य को भारतीय साहित्य के रूप में रखा जाता है भारतीय समाज में ब्राम्हण, क्षत्रिय , वैश्य समाज सामने रखकर बीसवी सदी तक अधिक साहित्य लिखा गया I सन १९४७ की आजादी के बाद भारतीय साहित्य में ब्राम्हण, क्षत्रिय , वैश्य के साथ अन्य समाज पर भी साहित्य लिखना शुरू हुआ I आदिवासी , घुंमतू समुदाय जो अब तक साहित्य के क्षेत्र में कम रहा वह भी अन्य समाज की तरह साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ चुका है Iभारतीय साहित्य में हिंदी तथा मराठी साहित्य में आदिवासी तथा घुंमतू समाज का चित्रण अधिक मात्र में हुआ है I

भारतीय हिंदी साहित्य में जो संत धारा रही है उसीप्रकार मराठी साहित्य में भी संत धारा रही है I इस देश के महाराष्ट्रीय इतिहास में समाज की संस्कृती सभ्यता अलग रही है I रामायण से लेकर अब तक मुगलों एवं अंग्रेजो के कालखंड में इस महाराष्ट्रीय समुदायो का कार्य इतिहास में उल्लेखनीय है I वैसे भारतीय समाज के विविध समाजों का अध्ययन करना कठीण काम है I फिर भी अधिक मात्र में समाज या समुदायों का जीवन साहित्य में चित्रित है I लेखक हो या पाठक समाज की सभ्यता और संस्कृती को समझना दोनों के लिए आकर्षण है I वैसे समाज में दो स्तर हम देख सकते है I एक वह जो प्रस्थापित है और दुसरा वह जो घुंमतू अर्थात भटकंती करके जीवन जीनेवाला I प्रस्थापित समाज का अपना घर गॉव होता है परंतु घुंमतू समाज का गावं या घर नही रहा है I उसमे कैकाडी, लमाण, बंजारा, नंदीवाले, गोसावी, कुडमुडे जोशी, फासेपारधी , गोपाल, रामोशी, ढोर, कोल्हारी नंदीवाले, धिसाडी , पारधी आदी अनेक है I यह घुंमतू समाज अधिक मात्रा में महाराष्ट्र में है I वैसे भारत के अन्य राज्यों में भी यह समाज अलग-अलग नाम से रहा है I

प्रस्थापित जातियों का अपना जीवन सरल एवं उच्च श्रेणी में रहा है I “शासक से लेकर सामान्य व्यक्ती तक का पुरोहित ब्राम्हण होता था I ब्राह्मणो के कुछ परिवार राजकुलो तथा सामन्तों के पारिवारिक में पुरोहित बने हुए थे I धार्मिक कार्मकांडो तथा अनुष्ठानों के अवसर पर संबंधित शासक अथवा सामन्त का प्रतिनिधित्व करते थे I”१. इसतऱह ब्राम्हण, क्षत्रिय , वैश्य समाज के लोग अपने कार्य के बल पर प्रस्थापित रहे I परंतु कुछ समाज ऐसा भी रहा जो गांव गांव भटकता रहा I जहॉ पर उसका पालन-

पोषण होता वही वह कार्यरत रहते I मेहतर समुदाय जो पहले काल में मलमूत्र साफ करनेवाला समाज था I महाराष्ट्र में यह समाज उत्तरीय राज्यों से आया है I मलमूत्र साफ करनेवाला यह समाज अपने ही समाज में उपेक्षित रहा है I ” हा समाज पूर्वीच्या काळी अत्यंत शूर, धाडसी आणि योद्धा म्हणून प्रसिद्ध होता परंतु मोगलांच्या काळात त्यांना पराभव पत्करावा लागला. लढाईत या लोकांना मोगलांनी पराजित केले आणि गुलाम बनवले. २.”गुलामी में अपमानित, उपेक्षित होनेपर यह समाज भी घुमंतू समुदायों में आया I घुमंतू समुदाय को देखा जाए तो वह उपेक्षित, वंचित या निम्न के रूप में रहा है I उस समाज में क्रांतिकारक या उच्चता भी कुछ समुदाय में उल्लेखनीय है I यह बंजारा (गोर) समाज को घुमंतू समाज के रूप में देखा जाता है I यह समाज अधिक राज्यों में है I बंजारा के लोग अपना भगवान संत सेवालाल को मानते है I संत सेवालाल को सेवभाया भी कहा जाता है I बंजारा समाज प्राचीन काल के इतिहास में उल्लेखनीय है I हर राज्य के राजा के दरबार में इस समाज का कोई महासेनानी रहा है I इस समाज का मुख्य व्यवसाय अनाज का लेन देन करना था I जिसके पास गाय-बैल जादा होते वह अधिक श्रीमंत होता इस समाज की संस्कृती सभ्यता महत्वपूर्ण रही है I

बिहार में मुण्डा आदिवासी परिवार का जीवन अलग रहा है I पहले तो यह बिहार में था परंतु आज वह अनेक बसा है I मुण्डा आदिवासी शिकार करके अपनी उपजीविका करते थे I समाज के परिवर्तन के साथ इस समाज में भी परिवर्तन हुआ I गांव गांव जाकर कम्बल बेचना इसका व्यवसाय रहा I प्रकृती को पूजा करना इस परिवार का उत्सव रहा है I उत्सव के समय घर-घर जाकर फुल बॉटना और कोई वस्तू प्राप्त करना यह भी उनकी साधना रही है I यह आदिवासी उत्सव अलग पर्व रहा है I सरना उनका देवस्थान है I ‘गाव का पाहान इन फुलों को लेकर सरना में गाव के देवी –देवताओं की पूजा कर उन्हें प्रसंन्न करता है I इस दिन मिट्टी के बर्तन में सामुहिक भोजन तैयार किया जाता है I “ ३. इस परिवार में विवाह तो पहले लडका-लडकी के पसंद से होते थे I लेकीन आज बाप के पसंद से इनके विवाह होते है I जंगलों में रहनेवाला यह समाज बडा साहसी था I

मराठी साहित्य मे घुमंतू समुदाय पर लिखने वाले लेखक लक्ष्मण माने है जिन्होने उपरा इस कादंबरी में कैकाडी, लमाण, बंजारा समाज जीवन का चित्रण किया है I इस समुदाय के लोग घुमंतू रहे है I किसी भी गाव में जाकर पाल या डेरा डालकर रहना और अपने परिवार के उदरनिर्वाह के लिए जोखीम भरे काम करना या कला करके लोगो का मनोरंजन करना उनका व्यवसाय था I उपरा इस कादंबरी में घुमंतू समुदाय का जीवन और उनका संघर्ष चित्रित है I “त्या खोकडयात बिऱ्हाड होत हुत. दिवसभर गाव मागितला , लई नाचली, दोरीवर उडया मारल्या, केसान दगड उचलला.” ४. कभी कभी गावं में चोरी हो जाती तो शक के आधार पर इन्हे ही चोर समझकर पुलिस पकडती I पुरे परिवार को इस पीडा से त्रासदि में रहना पडता I उपरा इस कादंबरी का हिंदी भाषा में अनुवाद हुआ है I सुर्यनारायण रणसुभे का उटायगीर यह उपन्यास यही है I दादासाहेब गायकवाड का उचल्या यह उपन्यास घुमंतू समुदाय पर चित्रित है I महाराष्ट्र के उचल्या समुदाय के जीवन चरित्र को प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास रहा है I बालासाहेब मोरे का नंदीवाले यह उपन्यास भी विमुक्त नंदी घुमंतू समुदाय के जीवन पर आधारित है I बैल लेकर गावं –गावं , घर-घर जाकर आस्था दिखाना या उनका भविष्य बताना, वंश परिवार का कथन करना उनका व्यवसाय होता I दादासाहेब मोरे का गबाळ यह उपन्यास कुंडमुडे जोशी घुमंतू समुदाय पर आधारित है I पहले तो यह समाज भविष्य बताकर अपनी उपजीविका चलाता I बाद में बर्तन बेचने का व्यवसाय करता रहा I इन उपन्यासों में अस्थायी घुमंतू समुदाय का जीवन, परिवार और संस्कुति झलकती है I गावं के लोगों या पुलिस के कारन भी इन्हे कभी-कभी संकटो से सामना करना पडा है, सहना भी पडा है I नंदीवाले, गोसावी, बंजारा कुडमुडे जोशी, कैकाडी, लमानी, फासे पारधी , बुरुड, कोल्हारी आदि अनेक घुमंतु समुदाय में आते है I इस विभुक्त घुमंतु समुदाय पर भारतीय साहित्य में चित्रण कम हो रहा है I

इसतरह विभुक्त घुमंतु समुदाय भारतीय समाज का ही अंग है फिर भी अन्य समाज की तरह इन्हे न्याय कम मिला है I यह समुदाय कभी अस्पृश्य के रूप में सामने आता है तो कभी पराक्रमी है I इस समुदाय में देशभक्ति भी सहज दिखाई देती है I हिंदू जाती से जुडे इस समाज को उपेक्षित रहना पडा है I इस उपेक्षित समाज के जीवन चरित्र को देखकर पाठक के मन में इनके प्रती

दया, सहानुभूती प्रतीत होती है I लक्ष्मन माने, दादासाहेब मोरे, सुर्यनारायण रणसुभे जैसे लेखकों ने इस समाज पर साहित्य लिखकर समाज में परिवर्तन या एकता स्थापित करने का सफल प्रयास किया है I आज अनेक सामाजिक विकास की संस्थाएँ है जो इस समाज में सुधार के लिए कार्यरत रहे यह अपेक्षित है I

संदर्भ ग्रंथ –

१. भारतीय सामाजिक संस्थाएँ – डॉ. काळूराम शर्मा पृष्ठ ३३

२. जाती आणि जमाती – रामनाथ चव्हाण पृष्ठ ०९

३. मुंण्डा आदिवासियों कि भाषाएँ और उनकी संस्कृती – डॉ . रुपांशुभाला पृष्ठ ६५

४. उपरा – लक्ष्मण माने पृष्ठ २१